आरती श्री भरत जी की

आरती आरति-हरन भरत की ।
सीयराम पद पंकज रत की ।।
धर्म धुरन्धर धीर बीरबल ।
रामसीय-जस-सौरभ मधुकर ।
सील सनेह निवाह निरत की ।
परम प्रीति पथ प्रगट लखावन ।
निजगुन गन जस अघ विद्रावन ।
परछत पिय प्रेम मूरत की ।
बुद्धि विवेक ज्ञानगुन इक रस ।
रामानुज सन्तन के सरबस ।
हरीचन्द्र प्रभु विषयविरत की ।

अवध राजु सुर राज सिहाई,
दसरथ धनु सुनि धनदु लजाई ।
तोहिं पुर बसत भरतु बिनु रागा,
चंचरीक जिमि चंपक बागा ।
रमा बिलासु राम अनुरागी,
तजम बमन जिमि जन बड़भागी ।
राम प्रेम भाजन भरतु बड़े न एहिं करतूति ।
चातक हंस सराहिअत टेक विवेक विभूति ।

विवरण

जो सीता और राम जी के चरणों की भक्ति में लिप्त रहते हैं, ऐसे भरत जी की आरती है । जो धर्म की राह पर चलने वाले हैं तथा जिनके अन्दर धैर्य है, बल है ऐसे भरत जी, श्री राम एवं सीताजी के यश को भ्रमर की गुनगुनाहट की तरह गाते हैं ।

तथा उनके स्नेह एवं प्रेम का निर्वाह करते हैं । श्री राम जी के प्रति आपका अथाह प्रेम दिखता है उनके वनवास जाने के क्रम में आपने उन्हें आधे रास्ते से लौटाकर लाने का विद्रोह करने लगे । आपके और श्री राम जी के प्रेम का कोई मोल नहीं है । आप बुद्धि, विवेक एवं ज्ञान के भंडार हैं, आप सभी प्रकार के विषयों से विरक्त रहने वाले हैं । रामानुज जैसे सज्जनों के आप देवता स्वरूप हैं ।

जो श्री राम जी के प्रेम में नित्य मगन रहते हैं उनके इस कीर्ति के समान कुछ बड़ा नहीं है जिनका सच्चा ज्ञान, पपीहा एवं हंस के समान सराहनीय है ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.